संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

वर्ष : १२६ : संयुक्तांक ४९ व ५० ०५ एवं १२ दिसम्बर २०२४ (गुरुवार) मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष द्वादशी सम्वत् २०८१ दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १९६०८५३१२५

आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य

-डॉ. महावीर मीमांसक

आर्यसमाज सन्२०२४ को ऋषि दयानन्द के २००वीं जन्मशताब्दी के रूप में मना रहा है। मुझे नहीं मालूम कि इन वर्षों में आर्यसमाज की मूर्द्धन्य संस्था सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारिणी सभा (ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा) ने किन कार्यक्रमों का निर्धारण करके पूरा करने की योजना बनाई है? अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन तो प्रति वर्ष पहले से ही निर्धारित है जो प्रतिवर्ष विश्व भर के किसी न किसी देश में होते रहते हैं। किन्तु उन अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों में किन कार्यों को पूरा करने का बीड़ा उठाया जाता है, मुझे मालूम नहीं? किन्तु ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का प्रतिवर्ष किसी न किसी देश में आयोजन प्रशंसनीय है जिसका समर्थन और सहभागिता प्रत्येक आर्य को करना चाहिये।

मैं आर्यसमाज के सभी नेताओं, सभी विद्वानों, संन्यासियों और सम्पूर्ण आर्यजगत् का ध्यान एक ऐसे तथ्य की ओर दिलाना चाहता हूँ जिसे आर्य बन्धु भूल रहे हैं या उपेक्षा कर रहे हैं। यद्यपि आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमों में अपने मिशन के रूप में किसी न किसी भाषण, प्रवचन में आर्यसमाज के महान् उद्देश्य को वेद के शब्दों में "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" कहकर याद तो अवश्य किया जाता है किन्तु कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की क्रियात्मक व्याख्या जो ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में की है उसे कभी भी घोषित नहीं किया और वह है आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य। इसी मिशन की क्रियात्मक पूरक व्याख्या है।

सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास जिसका उद्घाटक श्री गणेश अभी तक नहीं हुआ है, जो अभी तक लिफाफे में सील लगा हुआ बन्द है, जिसको विषय

बना कर कुछ एक शोधार्थी छात्रों या विद्वानों ने कुछ संक्षिप्त लिखा है। कौनसा ऐसा विषय है जिस पर ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट प्रमाणों और अकाट्य तर्कों के साथ नहीं लिखा है? सभी प्रकार के धार्मिक अन्धविश्वास सामाजिक कुरीतियां और भिन्न-भिन्न स्थानीय परम्पराओं को गिन-गिन कर ऐसे चीरफाड़ करके निकाल फेंका कि समाज का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ सकल और शुद्ध होकर जैसे नवजीवन कर लिया हो। यह सर्वाङ्गीण क्रान्ति की गूंज विदेशों तक गई और विदेशों से यह सन्देश भारत में आया कि मैं भारत में एक ऐसी ज्वाला जलती हुई देख रहा हूँ जो विश्व भर की समस्त सब प्रकार की गंद को भस्मसात कर देगी। वेदों का भाष्य प्रारम्भ करके ऋषि ने उद्घोष किया था कि मेरा वेदभाष्य पूरा होने पर विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली का विस्तृत विवरण लिख कर ऋषि ने बड़े विश्वास से सन्तोष की सांस लेकर आशा की थी कि अब लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली पर विराम लगेगा और गुरुकुलों द्वारा आर्ष शिक्षा प्रणाली का प्रचलन होगा। स्त्री "शूद्रौ नाधीयाताम्" की मान्यता पूर्णतः खण्डित होगी, महिला शक्ति पुनः संचित होगी और अछूत समझा जाने वाला सामाजिक शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग समाज में पुनः अपना समान अधिकार प्राप्त करेगा। इत्यादि इत्यादि।

इतना ही नहीं, सत्यार्थप्रकाश लिखने के अतिरिक्त सन् १८७५ में ही ऋषि ने आर्यमसाज की स्थापना की जिस आर्यसमाज का जाल सारे देश में तथा विदेशों में शीघ्र फैल गया। सन् १८८३ में अपने निर्वाण से पहले अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की स्थापना की। इसी सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यो को भारत की गरिमा याद दिलाते हुवे ऋषि ने लिखा "सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती" अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था।"

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों का विवरण देने के लिये इतिहास के अनेक भागों में बृहद् ग्रन्थों के अनेक भाग बन जायें तो भी विवरण पूरा न हो पाये। इतने कार्य ऋषि ने अपने छोटे से जीवनकाल में कर दिखाये।

ऋषि के इन क्रान्तिकारी कार्यों का परिणाम भी अद्भुत रहा। समूचा ब्रिटिश साम्राज्य हिल गया, देश में अकल्पनीय परिवर्तन हुवे, सभी धार्मिक अन्धविश्वासों का ऋषि ने चुन-चुन कर खण्डन किया गर्हित सामाजिक परम्पराओं को जड़ से उखाड़ फेंका और शास्त्र के नाम पर प्रचलित भ्रान्त धारणाओं की ऐसी चीरफाड़ की कि उनका नामोनिशान तक मिट गया। भिन्न-भिन्न धर्मों (पन्थों) में प्रचलित अन्धविश्वासों का खण्डन करने के लिये ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में योजनाबद्ध तरीके से लिखा। सर्वप्रथम हिन्दु धर्म में प्रचलित पौराणिक तथा अन्य अन्धी परम्परागत मान्यताओं का खण्डन सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें

क्रमशः.......७ पर

वेदामृतम्

यशो मा द्यावापृथिवी, यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु, यशो मा प्रतिमुच्यताम्।
यशसा ३ स्याः सं सदों, ऽहं प्रवदिता स्याम् ।। साम ६११

मैं देख रहा हूँ कि मेरे चारों ओर प्रभु के रचे हुए यशस्वी पदार्थ यश से सिर उठाये खड़े हैं। ये द्युलोक अपने अनन्त विस्तार के साथ दिन में सूर्य की ज्योति से और रात्रि में तारावलियों की ज्योति से जगमगाता हुआ अपने यश का ही गान कर रहा है। जड़-चेतन को अपनी गोद में आश्रय देनेवाली विशाल हिरण्य-गर्भा पृथिवी अपने झर-झर बहते झरनों से, कल-कल-निनादिनी सरिताओं से आकाश में मस्तक उठाए हिमाच्छादित धवल पर्वतों से, सुपुष्पित हरित वल्लरियों से, फल-भार से झुके मनोहर तरुओं से, उत्ताल तरंगोंवाले सागर से अपने यश का ही बखान कर रही है। मैं भी अपनी गुण- गरिमा से इन द्यावा-पृथ्वी के समान यशस्वी बनूं ।

ये इन्द्र और बृहस्पति भी कैसे यशस्वी हैं ! मन इन्द्र है, चक्षु बृहस्पति है, विद्युत् इन्द्र है, वायु बृहस्पति है। विद्युत् और वायु पर्जन्य को मथकर वृष्टि करने के यश से यशस्वी हैं। मन और चक्षु संकल्प-विकल्प और चाक्षुष ज्ञान कराने के यश से यशस्वी हैं। मैं भी इनके समान यशस्वी बनूं। यश मेरे जीवन में ऐसा समाजाये कि कभी मुझसे न छूटे । विविध गुणों के कारण अपने यश से मैं ऐसा प्रख्यात हो जाऊँ कि विभिन्न संसदों का और राष्ट्र की संसद् का यशस्वी प्रवक्ता बन सकूं। मुझे 'भग' का यश प्राप्त हो, धन, घर्म, श्री, ज्ञान, विवेक, वैराग्यादि का यश प्राप्त हो।

साभार-वेद मंजरी

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

निराकार ईश्वर की उपासना के लाभ

- ईश्वर और उपासक के मध्य कोई प्रतिनिधि अथवा पुजारी नहीं होता है। उपासक स्वयं को सीधा ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ लेता है ।
- निराकार की उपासना के लिए कहीं मन्दिर या पूजा स्थल नहीं जाना पड़ता है ।समय व धन की बचत होती है ।
- निराकार की उपासना में, ध्यान भटकता नहीं तथा मन को शांति प्राप्त होती है।
- निराकार ईश्वर को भोग चढ़ाने और धन की कोई आवश्यकता नहीं, वे तो स्वयं सृष्टि की रचना करने वाला हैं ।
- ईश्वर को मनुष्य अपने कर्मों से प्रसन्न कर सकता है, चढ़ावे से नहीं ।इस सिद्धान्त से समाज में प्रत्येक व्यक्ति अच्छे कर्म करेगा ।
- निराकार और न्यायकारी ईश्वर सदा हमारे विचारों कर्मों को जानता है और मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार दुख व सुख के रूप में फल पाता है ।इस सिद्धान्त से ही मनुष्य बुरे कर्मों से बच सकता है और समाज में सुख शान्ति रहेगी ।
- निराकार ईश्वर के लिए कोई मन्दिर, कक्ष, आश्रम बनाने की आवश्यकता नहीं और ना ही उसके रख रखाव पर व्यय करने की आवश्यकता है ।
- निराकार ईश्वर को ना कोई चोरी कर सकता और ना ही किसी सुरक्षा की आवश्यकता है ।
- निराकार ईश्वर को दिखा कर या नाम पर कोई ना भिक्षा माँग सकता है और ना कोई मुर्ति के क्रोध और प्रसन्नता के नाम पर धन की मांग ही कर सकता है।
- ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापक मानने से व्यक्ति को अनुभव होगा कि ईश्वर प्रत्येक स्थान पर है, उसे देख रहा है, तो बुरा कार्य करने से डरेगा।
- ईश्वर की निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान सत्ता को मानने से व्यक्ति अनुभव करेगा कि ईश्वर प्रत्येक समय उसके साथ है और उसकी रक्षा कर रहा है।इस से व्यक्ति में सुरक्षा की भावना आती है।
- निराकार ईश्वर को मानने से व्यक्ति भय रहित होगा तथा प्रत्येक कार्य आत्मबल से करेगा कि ईश्वर उसके साथ है और वह सफल भी होगा ।
- ईश्वर को निराकार मानने से व्यक्ति कर्म करेगा तो उसके परिणाम में संतोष भी करेगा ।उसके आगे रोये गिड़गिड़ायेगा नहीं, न ही ईश्वर को धमकी दे सकता है कि तूने मेरा काम नहीं किया तो मैं यहाँ तेरे पास नहीं आऊँगा ।
- निराकार ईश्वर को भक्त अपनी ओर करने के लिए बदले में धन, मिठाई, फूल नहीं चढ़ा सकता है।
- निराकार ईश्वर को मानने से व्यक्ति अपनी सफलता असफलता के लिए ईश्वर का क्रोध होना नहीं मान सकता है, जैसे मूर्तियों को दोष दे देता है ।व्यक्ति अपनी सफलता असफलता के लिए स्वयं अपने अन्दर ही गुण-अवगुण को ढूँढेगा और सुधार करके प्रयास करने पर सफल होगा ।
- यदि ईश्वर की निराकार सता को सभी मानने लगे तो धर्म के नाम पर व्यापार बन्द होगा और पुजारी भी अपने कार्य से मुक्त होगें ।
- निराकार ईश्वर को मानने से सभी मनुष्यो में आपस में प्रेम बढ़ेगा और यह सोच नही आ सकती कि मेरा भगवान तेरे भगवान से बेहतर, बड़ा और शक्ति वाला है इस तरह की सोच से लड़ाई झगड़ों से लोग बचेगें।

यदि संसार के सभी लोग निराकार ईश्वर के प्रति एक मत हो जावें तो ये धरती स्वर्ग बन जाए।

ईश्वर का स्वरूप :-

ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है ।

महाभारत में,

''सत्यतीर्थ क्षमातीर्थ तीर्थमिन्द्रयनिग्रहः,
ब्रह्मचर्य परं तीर्थम् अहिंसा तीर्थमुच्यते।
सर्वभूतदयातीर्थ तीर्थमार्जवमेव च,
तीर्थानामुत्तमं तीर्थ विशुद्धिर्मनसः पुनः।।''

सत्य का आचरण करना तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना तीर्थ है, ब्रह्मचर्य का पालन करना बड़ा तीर्थ है, अहिंसा पालन तीर्थ है, सभी प्राणियों पर दया करना तीर्थ है और सरल होना तीर्थ है । सभी तीर्थों में उत्तम तीर्थ मन की शुद्धता है। -सम्पादक

गतांक से आगे.........

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

१२५-अल्लाह पहिली बार करता है उत्पत्ति, फिर दूसरी बार करेगा उस को, फिर उसी की ओर फेरे जाओगे और जिस दिन वर्षा अर्थात् खड़ी होगी कयामत निराश होंगे पापी बस जो लोग कि ईमान लाये और काम किये अच्छे बस वे बीच बाग के सिंगार किये जावेंगे और जो भेज दें हम एक बाव, बस देखें उसी खेती को पीली हुई इसी प्रकार मोहर रखता है अल्लाह ऊपर दिलों उन लोगों के कि नहीं जानते।

- मं० ५। सि० २१। सू० ३०। आ० ११।१२।१५।५१।५९

(समीक्षक) यदि अल्लाह दो बार उत्पत्ति करता है तीसरी बार नहीं तो उत्पत्ति की आदि और दूसरी बार के अन्त में निकम्मा बैठा रहता होगा? और एक तथा दो बार उत्पत्ति के पश्चात् उस का सामर्थ्य निकम्मा और व्यर्थ हो जायगा। यदि न्याय करने के दिन पापी लोग निराश हों तो अच्छी बात है परन्तु इस का प्रयोजन यह तो कहीं नहीं है कि मुसलमानों के सिवाय सब पापी समझ कर निराश किये जायें ? क्योंकि कुरान में कई स्थानों में पापियों से औरों का ही प्रयोजन है। यदि बगीचे में रखना और श्रृंगार पहिराना ही मुसलमानों का स्वर्ग है तो इस संसार के तुल्य हुआ और वहाँ माली और सुनार भी होंगे अथवा खुदा ही माली और सुनार आदि का काम करता होगा। यदि किसी को कम गहना मिलता होगा तो चोरी भी होती होगी और बहिश्त से चोरी करने वालों को दोजख में भी डालता होगा। यदि ऐसा होता होगा तो सदा बहिश्त में रहेंगे यह बात झूठ हो जायगी। जो किसानों की खेती पर भी खुदा की दृष्टि है सो यह विद्या खेती करने के अनुभव ही से होती है। और यदि माना जाय कि खुदा ने अपनी विद्या से सब बात जान ली है तो ऐसा भय देना अपना घमण्ड प्रसिद्ध करना है। यदि अल्लाह ने जीवों के दिलों पर मोहर लगा पाप कराया तो उस पाप का भागी वही होवे जीव नहीं हो सकते। जैसे जय पराजय सेनाधीश का होता है वैसे यह सब पाप खुदा ही को प्राप्त होवे। १२५।

१२६-ये आयतें हैं किताब हिक्मत वाले की उत्पन्न किया आसमानों को बिना सुतून अर्थात् खम्भे के देखते हो तुम उस को और डाले बीच पृथिवी के पहाड ऐसा न हो कि हिल जावे। क्या नहीं देखा तूने यह कि अल्लाह प्रवेश कराता हैं दिन को बीच रात के, क्या नहीं देखा कि किश्तियां चलती हैं बीच दर्या के साथ निआमतों अल्लाह के, ताकि दिखलावे तुम को निशानियां अपनी।

मं० ५। सि० २१। सू० ३१। आ० २।१०। २९ । ३१

(समीक्षक) वाह जी वाह ! हिक्मतवाली किताब ! कि जिस में सर्वथा विद्या से विरुद्ध आकाश की उत्पत्ति और उस में खम्भे लगाने की शंका और पृथिवी को स्थिर रखने के लिये पहाड़ रखना। थोड़ी सी विद्या वाला भी ऐसा लेख कभी नहीं करता और न मानता और हिक्मत देखो कि जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं और जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं। उस को एक दूसरे में प्रवेश कराना लिखता है यह बड़े अविद्वानों की बात है। इसलिये यह कुरान विद्या की पुस्तक नहीं हो सकती। क्या यह विद्याविरुद्ध बात नहीं है कि नौका मनुष्य और क्रिया कौशलादि से चलती हैं वा खुदा की कृपा से? यदि लोहे वा पत्थरों की नौका बना कर समुद्र में चलावें तो खुदा की निशानी डूब जाय वा नहीं? इसलिये यह पुस्तक न विद्वान् और न ईश्वर का बनाया हुआ हो सकता है। १२६।

१२७-तदबीर करता है काम की आसमान से तर्फ पृथिवी की फिर चढ़ जाता है तर्फ उस की बीच एक दिन के कि है अवधि उसकी सहस्त्र वर्ष उन वर्षों से कि गिनते हो तुम, यह है जानने वाला गैब का और प्रत्यक्ष का गालिब दयालु, फिर पुष्ट किया उस को और फूंका बीच रूह अपनी से, कह कब्ज करेगा तुम को फरिश्ता मौत का वह जो नियत किया गया है साथ तुम्हारे और जो चाहते हम अवश्य देते हम हर एक जीव को शिक्षा उस की, परन्तु सिद्ध हुई बात मेरी ओर से कि अवश्य भरूँगा मैं दोजख को जिनों से और आदमियों से इकट्ठे।

- मं० ५। सि० २१। सू० ३२। आ० ५।६।९ । ११ । १३।

(समीक्षक) अब ठीक सिद्ध हो गया कि मुसलमानों का खुदा मनुष्यवत् एकदेशी है। क्योंकि जो व्यापक होता तो एकदेश से प्रबन्ध करना और उतरना चढ़ना नहीं हो सकता। यदि खुदा फरिश्ते को भेजता है तो भी आप एकदेशी हो गया। आप आसमान पर टंगा बैठा है और फरिश्तों को दौड़ाता है। यदि फरिश्ते रिश्वत लेकर कोई मामला बिगाड़ दें वा किसी मुर्दे को छोड़ जायें तो खुदा को क्या मालूम हो सकता है? मालूम तो उस को हो कि जो सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक हो, सो तो है ही नहीं होता तो फरिश्तों के भेजने तथा कई लोगों की कई प्रकार से परीक्षा लेने का क्या काम था ? और एक हजार वर्षों में तथा आने जाने प्रबन्ध करने से सर्वशक्तिमान् भी नहीं। यदि मौत का फरिश्ता है तो उस फरिश्ते का मारने वाला कौन सा मृत्यु है ? यदि वह नित्य है तो अमरपन में खुदा के बराबर शरीक हुआ। एक फरिश्ता एक समय में दोजख भरने के लिये जीवों को शिक्षा नहीं कर सकता और उन को विना पाप किये अपनी मर्जी से दोजख भर के उन को दुःख देकर तमाशा देखता है तो वह खुदा पापी अन्यायकारी और दयाहीन है! ऐसी बातें जिस पुस्तक में हों न वह विद्वान् और ईश्वरकृत और जो दया न्यायहीन है वह ईश्वर भी कभी नहीं हो सकता।१२७।

१२८-कह कि कभी न लाभ देगा भागना तुम को जो भागो तुम मृत्यु वा कत्ल से ऐ बीबियो नबी की ! जो कोई आवे तुम में से निर्लज्जता प्रत्यक्ष के, दुगुणा किया जायेगा वास्ते उसके अजाब और है यह ऊपर अल्लाह के सहल।

- मं० ५। सि० २१। सू० ३३। आ० १५। ३०।

(समीक्षक) यह मुहम्मद साहेब ने इसलिये लिखा लिखवाया होगा कि लड़ाई में कोई न भागे, हमारा विजय होवे, मरने से भी न डरे, ऐश्वर्य बढ़े, मजहब बढ़ा लेवें? और यदि बीबी निर्लज्जता से न आवे तो क्या पैगम्बर साहेब निर्लज्ज हो कर आवें ? बीबियों पर अजाब हो और पैगम्बर साहेब पर अजाब न होवे। यह किस घर का न्याय है ? ।१२८।

क्रमशः अगले अंक में.....

स्त्री शिक्षा में महर्षि दयानन्द का योगदान

-डॉ. गीता आर्या

महर्षि दयानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है, जिसकी व्याख्या करना हमारी बुद्धिक्षमता एवं व्याकरण कौशल से परे है। देवर्षि दयानन्द एक समाज सुधारक ही नहीं अपितु एक महान् तपस्वी, योगी, भाष्यकार, वेदाचार्य, वैज्ञानिक, समाज शास्त्री, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, कुशल वेद धर्मोपदेशक, धीर, गम्भीर, बलवान, ब्रह्मचारी, सदाचारी एवं प्रखर राष्ट्रवादी महामानव थे। व्यष्टि हो या समष्टि ऐसा कोई विषय नहीं जो उन्होने स्पर्श न किया हो।

जब नारी जगत् से सम्बन्धित सम्पूर्ण वैदिक वाङ् मय पर हम दृष्टिपात करते हैं तो पता चलता है कि वैदिक साहित्य में मातृशक्ति का जो समुज्ज्वल चित्र प्रस्तुत किया गया है वह विश्व की सम्पूर्ण नारी शक्ति के सर्वदिक् सामर्थ्य का निःसन्देह अद्भुत उदाहरण है। वह समस्त वैश्विक जनमानस के लिए अनुकरणीय है। आदर्श रूप है। अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है-

''भूमिर्माता द्यौः नः पिता'' ६/२०/२ अर्थात् समाज में पुरुष और स्त्री का कार्य वही है जो भूमण्डल में पृथिवी और सूर्य का है। इसी सच को स्वामी दयानन्द ने समाज के सामने रखा और अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत करते हुए लिखा-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते,
सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः। मनु.।।

पूजा का अर्थ स्वामी दयानन्द ने सत्कार बताया है। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि नारी की पूजा से देवता कैसे आ सकते हैं? पूजा का अर्थ सेवा होता है इसलिए उसे सदैव स्वस्थ व प्रसन्न रखने के लिए उसकी अच्छी सेवा, सम्मान व सत्कार आवश्यक है। हमारा भाव नारी के प्रति सदैव कल्याणपरक हो न कि शोषणपरक जैसा कि दीर्घकाल में चलता चला आया है। हमारा प्रयास हो कि मानव समाज के निर्माण में पूर्ण भागीदार महिला शक्ति शिक्षा, स्वास्थ्य व विद्वत्ता से परिपूर्ण हो ताकि आगे चलकर उस द्वारा उत्पन्न, पालित, पोषित व संस्कारित सन्तति समाज व राष्ट्र निर्माण में पूर्ण भागीदार बन सके।

सुव्यवस्थित मानव ही सभ्य समाज एवं उन्नत राष्ट्र का प्रतीक है। उस सुव्यवस्थित तथा पूर्ण संस्कारयुक्त मनुष्य निर्माण के पीछे एक नारी का बलिदान एवं समर्पण भाव छिपा है।

देवता का अर्थ है दान देने वाला, प्रकाशित करने वाला और प्रकाशित होने वाला। इसलिए जहाँ मातृशक्ति का सम्मान होगा वहाँ समाज में स्वयमेव देवत्व भावों का उदय होगा। महर्षि दयानन्द ने सामाजिक सुधार के समस्त कार्यों में नारी उत्थान को सर्वोपरि स्थान दिया। ऐसा क्यो? क्योंकि वे जानते थे कि नारी ही मनुष्योत्पत्ति व निर्माण का मूलाधार है। वैदिक मन्त्रों की व्याख्या करते हुए ऋषि कहते हैं ''क्या आपने कभी कोई ऐसा मकान देखा है जिसका दरवाजा न हो।'' वैदिक नारी उद्घोषणा कर रही है-

''देविर्द्धारो विष्ट्वध्वं सुपापजा न आपये''

यह वैदिक मन्त्र यह घोषणा कर रहा है कि ये नारियाँ सुख का द्वार हैं। और इस राष्ट्र रूपी भवन में यदि दरवाजा नहीं होगा जिसके माध्यम से हम सुख प्राप्त करते हैं तो हम सुख नहीं प्राप्त कर सकते। इस तरह महर्षि दयानन्द जी ने अपने वेदभाष्य में इस मन्त्र की व्याख्या कर मातृ शक्ति को समाज में ससम्मान इतने ऊँचे आसन पर बिठा दिया है कि अब 'नारी नरकस्य द्वारम्' कहने का कोई दुस्साहस नहीं कर पायेगा। और सुनिए वेदान्त भाष्य में आदि शंकराचार्य नारी के विषय में लिखते हैं

''अथास्य वेदम् उपशृण्वत त्रिपुजतुभ्याम् श्रोत्रप्रतिपूरणम् उच्चारेण जिह्वाच्छेदः।''

एक समय था जब आदि शंकराचार्य ने वेदान्त दर्शन के भाष्य में ये पंक्तियाँ लिखीं तथा ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम यह साहसपूर्ण कार्य किया और कहा कि इस राष्ट्ररूपी भवन में दरवाजा ये नारियाँ हैं। जो महत्व या स्थान किसी भवन में दरवाजों का होता है वही स्थान किसी समाज व राष्ट्र में नारीशक्ति का हुआ करता है। शतपथ ब्राह्मण का मत है-

''मातृमान् पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेद।''

महर्षि याज्ञवल्क्य माता को प्रथम गुरु मानते हैं। निःसन्देह आदर्श माता पिता व आचार्य के होने से ही व्यक्ति ज्ञानवान व संस्कारवान होता है।

''प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।''

वह माता धन्य है जो गर्भाधान से लेकर जब तक विद्यापूर्ण न हो तब तक अपनी सन्तान को सुशीलता का उपदेश करें। स्वामी जी लिखते हैं ''माता निर्माता भवति।'' माता ही सन्तान का निर्माण करती है इसलिए वह पूर्ण, स्वस्थ, सुशिक्षित, सुयोग्या व विदुषी होनी चाहिए।

इस दृष्टि से स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर बल दिया और आर्य समाज की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी था। उन्होंने आर्यसमाजों की स्थापना के साथ-साथ पुत्रीपाठशालाओं व कन्या गुरुकुलों की स्थापना की बात भी कही। उन्हीं की विचार धारा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से महात्मा मुन्शीराम और लाला देवराज जैसे आर्यपुरूषों ने सन् १८९० ई. में पंजाब प्रान्त के जालन्धर शहर में कन्या पुत्री पाठशाला की स्थापना की थी। स्वामी जी कि यही भावना थी कि किसी भी प्रकार मातृशक्ति का उद्धार हो। इसमें ऋषि दयानन्द व उनके आर्यसमाजी शिष्यों के सुधार कार्यक्रमों व नारी उत्थान के प्रति किए गये प्रयासों का ही परिणाम था कि १८५७ की क्रान्ति से पहले स्त्रियों के प्रति जो विलासितापूर्ण साहित्य लिखा जा रहा था उसमें अब परिवर्तन हो चुका था। सभी साहित्यकार स्त्री जागरण की बात करने लगे थे। बेशक इस सबके पीछे ऋषि दयानन्द व उनक आर्यसमाजी शिष्यों द्वारा नारी शिक्षा व सम्मान के लिए उठाए गए कदम ही तो थे जिससे प्रभावित होकर समाज के दूसरे लोगों ने भी नारीशिक्षा के प्रति अपने कदम बढ़ाये। महर्षि दयानन्द को संन्यासी होने के कारण सम्पूर्ण देश की मातृशक्ति की दशा की जानकारी थी। वे जहाँ भी जाते थे, उन्हें यह समझते देर न लगती थी कि उन पर इस देश में क्या बीत रही है। उन्होंने देखा स्त्री जाति अशिक्षा के कारण ही सामाजिक समानता के अधिकारों से वंचित थी। इसके अतिरिक्त वह बाल वधुओं व बालविधवाओं में फैलते व्यभिचार, शोषण व अत्याचारों का शिकार बन सामाजिक षडयन्त्रों से त्रस्त थी। देवर्षि दयानन्द को पूरे भारत भ्रमण से यह विदित था कि वर्तमान में नारी जाति को किस प्रकार मुख्य धारा में जोड़ा जाए। सर्वप्रथम उनको मातृशक्ति को ही सामाजिक वर्जनाओं से मुक्त कराना था। स्त्री शिक्षा व समानता के लिए ऋषि प्रयास लोक विख्यात हैं, उन्होंने स्त्री जाति को माता के रूप में सारे राष्ट्र की जननी कहकर भावी राष्ट्रनिर्मात्री कहा। ऋषि के अनुसार नारी शिक्षा से ही समाज शिक्षित व सबल हो सकता है।

भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तकों ने भी स्वामी दयानन्द के नारी उत्थान के विषय में अपनी सम्मतियाँ दी है। नारी उत्थान के लिए जितना कार्य स्वामी जी ने किया उतना शायद ही किसी ने किया हो। डॉ. भवानी लाल भारतीय जिन्होंने स्वामी दयानन्द पर अनेक शोधग्रन्थ लिखे हैं: उनके शब्दों में ''गांगेय तट पर विचरण करते हुए दयानन्द का यह धर्म प्रचार केवल पुरूष वर्ग तक ही सीमित न था वे नारी जाति के अभ्युत्थान के प्रबल समर्थक व प्रबल पक्ष पोषक थे। उन्होंने सभी क्षेत्रों में नारी के अधिकार की बात कही।

मध्यकालीन साधु-सन्तों, कवियों, दार्शनिकों व भक्तों में तो नारी जाति को आध्यात्मिक साधना मार्ग में बाधक ही समझा जाता था। उसकी कुत्सा व निन्दा का भी कोई अवसर अपने हाथ से नहीं जाने दिया जाता था। महर्षि दयानन्द ने पाखण्डियों के उद्घोष ''स्त्रीशुद्रौ नाधीयताम्'' की कड़ी निन्दा की और बताया कि ये महिला विरोधी और पाखण्डियों द्वारा बनाए गए कल्पित वाक्य है। वेदों में ऐसा कहीं पर नहीं लिखा है। ऋषि ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में यजुर्वेद मे मन्त्र को उद्धृत करते हुए लिखा

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय व स्वाय चारणाय।। यजु. अ. २६/२

परमेश्वर कहता है कि सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार मुक्ति के सुख देनेहारी वाणी का उपदेश करता हूँ वैसे ही तुम भी किया करो। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र को समान रूप से वेद पढ़ने का अधिकार है। ईश्वर की बात सभी को माननी चाहिए जो न माने वह नास्तिक कहलाएगा। ऋषि ने वेद के उदाहरणों द्वारा सिद्ध किया कि स्त्री शिक्षा वेदविहित है। वेद ने नारियों की चाल-ढाल अथवा स्वभाव का भी चित्रण किया है। ऋग्वेद का मन्त्र साफ कहता है - ''अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथा (ऋग् ८/३३/१९) भावार्थ'' हे नारि ! नीचे देख, ऊपर मत देख। अपने पैरों को एकत्र करके रखा तेरे शरीर का कोई भी अंग जांघे, पिण्डलियाँ इत्यादि दिखाई न दें क्योंकि स्त्री ही ब्रह्मा आदि निर्माणकर्मी है। इस मन्त्र में नारी के शील स्वभाव का वर्णन किया है। समस्त सद्गुणों को अपने जीवन में धारण करके समाज को सन्मार्ग एक नारी ही दिखा सकती है। वैदिक काल में नारियों की स्थिति समाज में काफी ऊँची थी। उन्हें अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वे धार्मिक कार्यों में केवल भाग ही नहीं लेती थी अपितु धार्मिक क्रियाकलापों को सम्पन्न भी कराती थी। मातृशक्ति को देवी स्वरूपा माना जाता था। मन्त्र कहता है- ''इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भवः'' ये तीन गुण नारियों मे विद्यमान होते हैं। नारियाँ मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाएँ हुई है। विदुषी नारियों ने शास्त्रार्थों मे बड़े-बड़ों को पराजित कर अपनी गरिमा को स्थापित किया है। गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, लोपामुद्रा आदि विदुषी नारियों का इतिहास व पुराणों में भी वर्णन मिलता है। वेद नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, गरिमामय व अत्यन्त उच्च स्थान प्रदान करते हैं। भारत वर्ष में सदैव नारियों को समुचित सम्मान मिला है। उन्हें पुरुषों की अपेक्षा पवित्र माना जाता है।

महर्षि दयानन्द का जन्म उस समय हुआ जब भारत भू पर मातृशक्ति की दशा अत्यन्त दयनीय थी। समाज में बालविवाह प्रथा प्रचलित थी। विधवा विवाह के स्थान पर नारी जाति शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक शोषण की शिकार थी। उसे पैर की जूती समझा जाता था। ऐसी स्थिति में देव दयानन्द एक ज्योति पुंज के समान हमारे सामने उपस्थित होते हैं और स्त्री जाति की दुर्दशा के निवारण के लिए पूर्ण उदारता के साथ कार्य करने में संलग्न हो जाते हैं। ऋषि दयानन्द के हृदय में सर्वाधिक दो पीडायें थी। गुलाम भारत को स्वाधीन तथा वेदानुकूल देखना तथा दूसरा महिलाओं की दुर्दशा को दूर कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना।

क्रमशः......५ पर

दाम्पत्य व्यवहार में नवाचार के उपहार

-देव नारायण भारद्वाज

प्रोफेसर शरदेन्दु जी! हम सब सज्जन प्रभात भ्रमण से लौट रहे है। एक रहस्य आप से जानना चाहते है। आप पति-पत्नी किसी भी समारोह में मिलते हैं तो हंसते हुए ही मिलाते हैं। इस ज्ञान सरोवर कालोनी के हम सभी के घरों में कभी न कभी वाद-विवाद या झगड़ा फसाद का शोर बाहर भी सुनाई दे जाता है। आपके आवास के पास से जब भी निकलते है। तो यह सुखद शान्ति मिलती है। या फिर आप दम्पति का हास्य गुंजन सुनाई देता है। इतने में प्रफेसर साहब की धर्मपत्नी चाय लेकर बैठक में आ गयी। इस जिज्ञासा के समाधान का भार भी गृह स्वामिनी दुर्गेश नन्दिनी पर आ पड़ा। उन्हें समाधान करने में कोई देर नहीं लगी। वे बोली, यहाँ भी वैसा ही झगड़ा होता है। जैसा पूरी कालोनी में होता है। हम लोगों के बीच में एक समझौता है। हम दोनों यथा नाम गुण वाले हैं। ये सन्तोषी, मैं क्रोधी। ये अपने ही काम में व्यस्त रहते हैं. और मैं गृह कार्य में। जब श्रीमान जी असहयोग या भूल करते है तो मैं हल्की घुंघरू वाली गेंद से इन पर प्रहार करती हूँ। इनके लग जाती है तो मैं हंसती हूँ और ये अपने को बचा ले जाते है तो ये हंसते है। इधर मी हंसी उधर भी हँसी। इसी खेल-खेल में मेल हो जाता है। यह हास्य व मुस्कान दम्पति को तो जोड़ते ही है, परिवार-परिवेश व समाज को जोड़कर रखने का भी काम करते हैं।

इस जोड़ के तोड़ में मी लोग लगे रहते है। इसके लिए वे किसी न किसी व्यंग्य बाण के छोड़ने में लग जाते है। विश्व ख्याति प्राप्त महान भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु अत्यन्त क्षीणकाय, उसकी पत्नी स्थूलकाय। एक आगन्तुक उनसे कह बैठे आपकी जोड़ी कैसी है? बसु महोदय ने जो कहा उससे उतनी बोलती बन्द हो गयी। उन्होंने कहा हमारी जोड़ी परम सुन्दरी-पत्नी बरगद है और मैं उसपर आश्रित लता। उपमा सुनकर कौन पत्नी गदगद नहीं हो पायेगी? बसन्त पंचमी के पर्व पर कावि महोदय से साहित्यकार भी मिलने आये। पति पतले स्फूर्त, गौरांग उनकी पत्नी अति स्थूल व चटक स्याम-सुन्दरी। पीले रंग की साड़ी पहनकर वे सजधज कर कवि पति के समीप आयी जो कभी नहीं पूछती थी, आज पूछ बैठी- मैं कैसी लग रही हूँ। उपस्थित साहित्यकार परिवार से हिले-मिले सरसों के फूले-खेत में भैंस खड़ी पगुराय। पत्नी ने जिस मुस्कान के साथ बैठक में प्रवेश किया था, वह तो अधरों से प्रस्थान कर गयी और ठिठक कर खड़ी रह गयी। पति ठहरे कवि और तुरन्त कविता गढ़ दी- ''धन्य धन्य प्रभु की नाटिका, कोकिल की पीली शाटिका। स्वागत, तुम्हारा देविका, बासन्ती सजाई वाटिका।'' सुनकर पत्नी के अधरों पर फिर से मुस्कान आ गयी, और आगन्तुक साहित्यकार को भी स्वादिष्ट चाय-पकौड़ों के साथ मिल गयी।

दम्पति निर्माण की विधि जो वैदिक विवाह में निहित है वह अद्‌भुत और अलभ्य है। शहनाई, सुगन्धि, सुसज्जा के साथ मुस्कानों के संगम के मध्य मातृ-पितृ-परिवार जन के सान्निध्य में कन्या वर का स्वागत करती है। दोनों पक्षों के समूह हास-परिहास-मुस्कान को अट्टाहास करके प्रकट करते है। वर-कन्या की मुस्कान इस समय इतनी मूल्यवान होती है कि वह इनके हृदय में गुप्त रहती है। कन्या का वर के लिए पहला सम्बोधन होता है- साधु। वह उससे अर्चन की सहमति चाहती है। अर्चन उसका होता है जो साधु होता है अर्थात् सुयोग्य, सरल, सहृदय और कार्य साधक होता है। ऐसे ही साधक पत्ति की आराधिका पत्नी होती है। पति द्वारा पत्नी का जब पाणिग्रहण किया जाता है, तब वह स्वयं को गृहपति एवं पत्नी को धर्मपत्नी घोषित करता है। सांसारिक साधन सामग्री का संग्राहक पति और धर्म-कर्म संधारिका पत्नी दोनों ही एक होकर एक-दूसरे के इस लोक एवं परलोक का प्रबन्ध करते हैं। सप्तसदी में सात कदम साथ-साथ चलकर पति गृह का सम्पूर्तिकर्ता व पत्नी संरक्षिका बनकर परस्पर सखा होने की घोषणा करते हैं। कोई स्वामी नहीं है, कोई दास नहीं। साथ-साथ खाने वाले समान ख्याति के पात्र बनते हैं।

निज, सन्तति, परिवार, समाज, राष्ट्र व वैश्विक कल्याण कामना अनेकशः यज्ञाहुतियों के द्वारा करके भर्ता एवं भार्या बनने के लिए उनका ग्रन्थि बन्धन होता है। ऊपर से दो वस्त्रों में गाँठ लगा कर उसे कितना ही विस्तीर्ण कर लिया जाता है। वैसे ही वर कन्या की इस ऊपरी गाँठ से उनके हृदय को जोड़ दिया जाता है। वे दो शरीर तथा एक हृदय (समान हृदय वाले) हो जाते हैं। इस गाँठ का ठाठ कुछ निराला ही होता है। कहा गया है-

जहाँ गांठ तहाँ रस नहीं, यह
जानत सब कोय।
मैडुए तक की गाँठ में, गाँठगाँठ
रस होय ।।

कितना ही मीठा गन्ना लीजिये। गाँठ में रस नहीं मिलता है। विवाह मण्डप की इस गाँठ में गाँठ-गाँठ रस होता है। वर-कन्या जुड़ गए, दम्पति बन गए। इनमें माता-पिता जुड़ गए, इतने जुड़ गए कि वे सास-ससुर बन गए। ऐसे ही अनेकानेक सम्बन्ध जुड़ते चले गए। अरमान में अगर मुस्कान है तो यही प्रेम की पहचान है। इन सम्बन्धों को वैसे ही संभाल कर रखना पड़ता है जैसे कोई कच्चे धागे को रखता है। जरा उलझा नहीं कि टूटा नहीं।

''रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय जोड़े से फिर ना जुड़े. जुड़े गाँठ पड़ जाय।।''

वो साबुत को जोड़ने से मण्डप की गाँठ बनती है। एक साबुत को तोड़कर फिर जोड़ने से धागे की गाँठ बनती है। अस्तु. वम्पति को हर सावधानी रखकर प्रेम के धागे को टूटने नहीं देना चाहिए। लेखक ने ऐसे अनेक दम्पतियों से भेंट की है। पति या पत्नी जो भी बाहर से घर आता है, अथवा कुछ अन्तराल के बाद एक दूसरे को निहारता है. तो दोनों के अधरों पर गुस्कान-मधुर मुस्कान का साम्राज्य छा जाता है, चाहे कोई समस्या ही क्यों न हो, ये उसका सामना कर लेते है।

वे दम्पति, दम्पति नहीं स्वयं अपनी विपत्ति बन जाते है, जिनको जोड़ने वाली मुस्कान उनके अधरों से तिरोहित हो जाती है। पति-पत्नी दोनो समृद्ध व्यवसायरत, घर में नौकर-चाकरों का राज्य, स्वाभाविक है कि उन पर पत्नी का नियन्त्रण ही रहना है। नये आये अनाड़ी रसोइये ने भोजन बनाया, कुछ जली-भुनी अधपकी रोटी बच गयी। उसने मालकिन से पूछा 'उन्होंने रसोइये ने पूछा, साहब ने खाना खा लिया? उसका उत्तर था- हाँ, तो फिर कुत्ते को डाल दो। बात एक ही तरफ की नहीं, दूसरी ओर भी कुछ ऐसा होता है। जीवन चलता रहता है। मुस्कान बिना अधरों का मधुरस सूखता रहता है। काम सब होते हैं मन में, आराम नहीं होता।

पति-पत्नी सिनेमा हाल में छाया चित्र देखने गये। प्यार का एक दृश्य आया। प्रेमी अपनी प्रेमिका से प्यार करता हुआ दिखाई दिया। पत्नी बोली काश! आप भी मुझे ऐसे ही प्यार करते। पति ने पत्नी के कान में कहा- ''जानती नहीं, इसे प्यार करने के पैसे मिलते है। जीवन भार बन जाने का एक नमूना और देखिए। मैके से वापस आने वाली पत्नी को पति स्टेशन पर लेने गये। एक डिब्बे से इनकी पत्नी उतरी, और देखा अगले डिब्बे के द्वार पर एक दम्पति हँसते-मुस्कराते प्रेमालाप कर रहे हैं। पत्नी ने यहाँ भी प्रश्न उछाल दिया कि क्या अब मै सुन्दर नहीं रही, जो आप मुझसे ऐसे प्यार नहीं करते। पति बोले ऐसी शंका की कोई बात नहीं, बस अन्तर इतना है कि यह अपनी पत्नी को गाड़ी में छोड़ने आया है, और मैं तुम्हे लेने आया हूँ।

वर-वधू, दूल्हा-दुल्हन, पति-पत्नी को एकरूप करने के लिए दम्पति शब्व में जो दम है, वह अन्यत्र बहुत कम है। अन्तिम दम तक पत्नी का पति (रक्षक) रहे, और पति की पत्नी (रक्षिका) बनी रहे। यह रक्षा का क्षेत्र तो बहुत विस्तृत है, पर इसका शुभारम्भ अमर्यादित व्यसन-वासनाओं के चयन से ही होता है, जिसका ध्वनि संकेत 'दम्पत्ती शब्द हर दम करता है। सब सांसारिक व्यवहार ने पत्नी पति के वामाग रहती है, इससे वह पति के हृदय के अति समीप रहकर उसका उत्साहवर्धन करती है। वाम का अर्थ बायां ही नहीं, सुन्दर भी होता है। उत्साहवर्धन का स्रोत मुस्कान प्रदर्शन है। सुन्दरी के शोभन मुस्कान-वान से पति के हृदय का संकुचन-प्रसारण नियोजित बना रहता है। वह रक्तचाप के रोग से बचा रहता है, क्योंकि इसी से हृदयघात का खतरा रहता है। धर्म, दर्शन, आध्यात्म के मार्ग में इस वामांगी की सहायता अपरिहार्य है, जिनका योग हर व्यक्ति का बायाँ हाथ करता है। कोई व्यक्ति जब ब्रह्मयज्ञ (संध्या) देवयज्ञ (अग्निहोत्र) करता है, तो सर्व प्रथम बायाँ हाथ आगे बढ़ा कर जल पात्र उठाता है और दाँये हाथ की अजुली में अपना मृदु रस उड़ेलता है। तब आचमन की क्रिया होती है तथा बायें हाथ में सरोवर से ही दायें हाथ की अंगुलियां स्पर्श करके याजक को आध्यात्म-पथ के लिए तैयार करती हैं। सीता ने राम को, रुक्मिणी ने कृष्ण को. रत्नावली ने तुलसी को, शिवदेवी ने मुशीराम (श्रद्धानन्द) को, कस्तूरबा ने मोहनदास (महात्मा गांधी) को ललिता ने लाल बहादुर शास्त्री को प्रेम मार्ग पर पगडंडी से श्रेय मार्ग पर राजपथ पर अग्रसर किया।

कोई व्यक्ति इन बातों को लेखक का जल्प-प्रलाप ही न समझे, अस्तु वेद से इनका अनुमोदन माँगते हैं। ''मन्द्रया सोमधारया वृषा पवस्य देवयुः। अन्या वारेभिरस्मयुः।। (साम ५०६) अर्थात् हे (सोम) सोम। तू (मन्द्रया धारया) हँसती मुस्कराती मधुर मुस्कान वाली धारण शक्ति की धाराओं के साथ (वृषा) जीवन में सुख-शांति की वर्षा करने वाला है। (देवयुः मेरे साथ दिव्य गुणों को जोड़ने वाला है। तू (पवस्य) मेरे जीवन में प्रवाहित हो. मेरे जीवन को पवित्र कर, तू (अन्या) रक्षण एवं (वारेभिः) बुराइयों व रोग निवारण, तथा उत्तम गुणों के घारण से (अस्मयुः) हमें उत्तम बनाने वाला है 'सोम' स्नेहपूर्वक सृजनकर्ता परमात्मा एवं शरीरस्थ वीर्य का नाम भी है। प्रभु सोमेश्वर की कृपा छाया के अन्तर्गत शक्ति सम्पन्नः होकर, ईर्ष्या-द्वेष व दुर्व्यासनों से बचकर व्यक्ति अपनी रक्षा तो करता ही है और संसार का प्यारा राजा दुलारा भी बना रहता है। इससे दम्पति की अनुराग-ग्रन्थि तो सुदृढ़ रहती है. जो एक सीमा तक संसार को भी जोड़ती है और प्रभु के राग के लिए विराग की ओर भी मोड़ती है। यह वैदिक संस्कृति ही है जो प्रत्येक युवक-युवती को विवाह मण्डप को यज्ञवेदी पर विष्णु-लक्ष्मी की मान्यता अथवा राजा-रानी की गरिमा प्रदान करते हुए बड़े बड़ों के द्वारा उनके पूजन-अर्चन के विधि-विधान सम्पन्न कराती है। वेदी से उठकर नव दम्पति ससार को अर्जन, व्यंजन, वर्जन, तर्जन, रंजन में ऐसे रम जाते है जो इसकी यज्ञाग्नि को भूल ही जाते है। कुछ ही होते है जो इसको दैनिक यज्ञ के रूप से अपनाये रहते हैं। वे देवताओं को बुलाते तो है, वे आते भी है, किन्तु उन्हें ये पहचान नहीं पाते है। उनकी मुस्कान के दान में अपनी मुस्कान का प्रतिमान नहीं कर पाते है। अग्नि, सूर्य, इन्द्र, वरुण, वाचस्पति, आपः, ऊष्मा, ज्योति, मेघा, वाणी आदि देव-देवियों के नाम उच्चाराण से ही क्या मुस्कान की प्रभा बिखरती नहीं दिखाई देती है? देती है, पर यांचक इस मुस्कान का उत्तर मुस्कान से नहीं दे पाता है। सच्चा याजक वही है जो इन देवताओं को - इनके गुणों को अपने साथ जोड़ने वाला योजक बन जाता है। यही योजक जब इन देवताओं की शक्ति से संसार-परिवार-व्यवहार का परिष्कार करता हुआ अपने परिवेश के प्रियजनों को अपने साथ जोड़ लेता है, या उनके साथ जुड़ जाता है तो वही योजक यजमान पद का अधिकारी बन जाता है। वह यज्ञ का मान करता है। यज्ञ उसका सम्मान करने लगता है। देव-मुस्कान ही है जो दम्पत्ति को याजक-योजक यजमान बनाती है।

''आवत हिय हर्षे नहीं, नयनन नहीं स्नेह। तुलसी वहाँ न जाइए कंचन वर्षे मेह।।''

दम्पति का हर्ष-स्नेह उसकी मुस्कान से ही झरता हुआ दिखाई देता है। जो दम्पति स्वयं इस

क्रमशः.......६ पर

वैदिक ज्ञान परम्परा में अग्निहोत्र की वैज्ञानिक प्रासंगिकता

-डा श्वेत केतु शर्मा

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक संस्था बेब्स व दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कालेज की संस्कृत विभाग के सम्मिलित तत्वावधान में वैदिक ज्ञानपरम्परा की आधुनिक समय में प्रासंगिकता विषय पर आधारित गत शुक्रवार दिनांक ६ दिसम्बर, २०२४ को कालेज के विशाल सभागार में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, इस अवसर पर बरेली के सुविख्यात वैदिक विद्वान श्वेत केतु शर्मा ने 'वैदिक ज्ञान परम्परा में अग्निहोत्र की वैज्ञानिक प्रासंगिकता 'विषय पर अपना २५ पृष्ठ का शोध-पत्र पढ़ा।

इस अवसर पर अपने विषय को (१):-भूमिका (२):-आयुर्वेदीय या वैदिक यज्ञ चिकित्सा क्या है (३):- यज्ञ या धूमि(४):-यज्ञ व यज्ञ में प्रयुक्त पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण (५):- यज्ञ पर आधुनिक चिकित्सक शोध (६):-यज्ञ पर वैज्ञानिक शोध (७):-यज्ञ में विशेष बनौषधियों से बचाव (८):- वेद मंत्रों से विभिन्न रोगों से बचाव९):-हवन या घूमी का विधान (१०)-उपसंहार। (११) संदर्भ ग्रंथ सूची आदि विषयों विश्लेषण करते हुए कहा कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण प्रगति, देश में विभिन्न घातक रोगों के सरकारी दावें तथा देश में फैल रहे प्लेग, तपेदिक, कोढ, स्वान फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, एड्स, चर्मरोग, ह्दय रोम, गुर्दा रोग, कोरोना वायरस आदि की उपस्थिति से निरंतर प्रसार से विश्व सकते में है, इन सब की रोकथाम के लिये कारगर औषधि का अभाव दिनोंदिन बढता चला जा रहा है, इन रोगों के पीछे गन्दगी, गरीबी, आवादी, औद्योगिकीकरण, वैभव विलासिता, अदूरदर्शी योजनाएं व अवव्हारिक नीतियां, आपसी सामन्जस्य का अभाव व दृढ़ इच्छा शक्ति का न होना भी हैं।

भारतीय श्रृषि मुनियों के वैदिक चिन्तन पर आधारित यज्ञ चिकित्सा त्वरित उपाय के अभाव में मानव समुदाय के लिये गम्भीर चुनौती है ।वेदों के परिपेक्ष में यज्ञ वैदिक संस्कृति व आयुर्वेद के प्राण है ।वेदों में 'यज्ञौ वै श्रैष्ठतम कर्म 'कहा गया है अर्थात यज्ञ जीवन का श्रैष्ठतम कर्म है,यज्ञ एक चिकित्सा विज्ञान है इसे कर्मकांड की परिधि से निकाल कर देखने की जरुरत है ,इसीलिए महर्षि दयानंद ने कहा कि वेद सर्वसत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढना पढना और सुनना सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है ' ।विभिन्न रोगों की रोकथाम व पर्यावरण विशुद्ध करने के लिये यज्ञ थैरेपी या यज्ञ चिकित्सा महत्त्वपूर्ण है ।डा श्वेत केतु शर्मा ने कहा कि अग्निहोत्र-यज्ञ-हवन-धूमि का वर्णन प्राचीन वेद-पुराणों व चरक में धार्मिक संस्कारों व स्वास्थ्य संवर्धन के रूप में किया गया है, जो एक नित्य यज्ञ है। जो प्रदूषण को अल्प करने तथा वायुमंडल को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने हेतु किया जाता है । इसका उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है ।यज्ञ या अग्निहोत्री का शाब्दिक मूलअर्थ है:-'अग्निहोत्र' शब्द यज्ञ में अग्नि के आस्वान का सूचक है। वैदिक मंत्रों के साथ अग्नि में आहुति देना अग्निहोत्री या धूम चिकित्सा में केवल बनौषधियों के साथ सेंधानमक डालकर धूप बनाकर अंगारों में डालकर धूम निकालने का विधान है। यज्ञ से निकलने वाली गैस या धूमी कष्ट को रोकती है, इसमें स्वास्थ्य सन्वर्धन व रोग निवारण की शक्ति है, मानसिक रोगों को सकारात्मक उर्जा प्रदान करती है, मस्तिष्क के मर्म स्थानों को प्रभावित करती है, सुगंध से कीटाणुओं निष्क्रियता को प्राप्त करते है, इसमें वेद मंत्रो का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है, यज्ञ की अग्नि से निकलने वाली गैस, धूंये रूपी कार में वेद मंत्र स्टेयरिंग का काम करते है। यज्ञ थैरेपी या चिकित्सा में जडीबुटियां जब अग्नि के संपर्क में आती है तो आक्सीजन में मिश्रित हो कर नस नाडियों में सूक्ष्म रूप से प्रवेश करके वायरस,वैक्टेरिया व विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं को निष्क्रियता प्रदान करके शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास करती है व शरीर के श्वेत रक्त कणिकाओं को नष्ट नहीं होने देते है। महान वैज्ञानिक डा० फुन्दन लाल, प्रो राम प्रकाश चन्डीगढ व डा० सत्य प्रकाश सरस्वती जी इलाहाबाद ने अनेकों प्रयोगों से इसे प्रमाणित किया है ।

वैदिक प्रवक्ता श्वेत केतु ने सुविख्यात विद्वानों के मध्य कहा कि-WH O ने एक विश्व सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि मानव जीवन के हितार्थ चिकित्सा जगत में आ रही। ntibiotics, का प्रभाव २०२६ से २०३० तक प्रभाव हीन हो जायेगीं,यदि WHO के इस सर्वेक्षण को मान लिया जाये तो आगे आने वाले समय में स्थिति भयंकर हो सकती है,जो अभी भी विभिन्न वायरस रोगों की चिकित्सा में antibiotics के निष्प्रभावित होने का संकेत दे रही है, इसीलिए वेद में सृष्टि के आदिकाल में ही कहा है 'आयुर्यज्ञेनकल्पताम' जीवन की यज्ञ से रक्षा करो, क्यो की यज्ञ में ही वह शक्तियां है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवाणुओं को निष्क्रिय कर सकती है, वैज्ञानिकों में डा. फुन्दन लाल जी, डा सत्य प्रकाश सरस्वती, डा. राम प्रकाश, डा० टेले, डा० टोकीन, राष्ट्रीय बनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, डा० कर्नल हाफकिन, डा० किंग आदि ने अनेकों प्रयोगों व अनुसंधान ने स्पष्ट किया है कि यज्ञ मे डाली गई विभिन्न बनोषधियां सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर पर्यावरण को विशुद्ध करती है व शरीर को स्वास्थ्य रखती है तथा यज्ञ में डाली गई बस्तुयें करोडों गुना सूक्ष्म होकर विभिन्न वायरस वैक्टीरिया को निष्क्रिय करके शरीर को खतरनाक वायरस से सुरक्षित करती है ।

अपने शोध पत्र में यज्ञ में विशेष बनौषधियों से बचाव का कभी विस्तार से वर्णन करते हुए वेदों के २० मंत्रों का उल्लेख भी किया जिन वेद मंत्रों उच्चारण से विभिन्न वायरस बैक्टेरिया संक्रामक व महामारी रोगों से बचाव किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों व परिप्रेक्ष्य मे वातावरण से वायरस,वैक्टेरिया आदि को समूल नष्ट करने के लिये श्रृषि मुनियों के द्वारा प्रतिपादित वैदिक सनातन परम्परा यज्ञ, अग्निहोत्र, हवन, धूमि विधा को सम्पूर्ण विश्व में अपनाना पडेगा ,वातावरण से शरीर से रोगों से विमुक्त करने व स्वास्थ्य संरक्षण के लिये यज्ञ थैरेपी अत्यधिक महत्वपूर्ण है व यह ही समाधान है। शोध-पत्र को काफी सराहा गया।

इस अवसर पर देश विदेश ४ एकेडमी सत्र में ३२ विद्वानों शोध लेखकों जो विभिन्न विश्वविद्यालयों महाविद्यालयों व वैज्ञानिकों ने अपने शोध-पत्र का वाचन किया तथा अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डा देव कृष्ण दास, प्रो डा. भारतेन्दु पाण्डेय, दिल्ली विश्वविद्यालय,प्रो सुधीर लाल,प्रो संजय कुमार झा,डा कोमेकार्पेन्टीयर डी गोरडोन, फ्रांस, आदि अतिथि शोध-पत्र वक्ता के रूप में विचार प्रकट किए। मुख्य अतिथि प्रो.ओम नाथ बीमारी, निदेशक हिन्दू अध्ययन व विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि प्रो हनीत गांधी डीन दिल्ली विश्वविद्यालय,बेब्स की भारतीय अध्यक्ष प्रो शशि तिवारी, बेब्स के राष्टीय महासचिव प्रो रंजीत बेहेरा, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रो. सविता राय, प्राचार्य ,दौलत राम कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय, प्राचार्य प्रो अंजू सेठ, सत्यवती कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रो आर एस कौशल, प्रो. सुषमा अग्रवाल, डा. अपर्णा धीर, महासचिव बेबस, प्रो दया शंकर तिवारी, प्रो हरीश,प्रो संध्या राठौर प्रो. यास्मीन अशरफ, डा. सुशीला कुमारी, प्रो. बंदना आर्या आदि सैकड़ों विद्वान विदुषियां उपस्थित रहे। इस सम्पूर्ण आयोजन का संयोजन दौलत राम कालेज की प्रो कामना विमल, बेब्स के महासचिव प्रो रंजीत बहेल, डा. अर्पणा ने किया।

पृष्ठ....३ का शेष....

वैदिक युग के बाद स्वामी दयानन्द ही वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नारी उद्धार की बात कर समाज मे शिक्षा व समानता का अधिकार दिलाया। इतिहास का सिंहावलोकन करने पर पता चलता है, पशुओं के बाद यदि किसी प्राणी पर सर्वाधिक अत्याचार हुआ तो वह नारी ही थी, बस नारी! और सच यह भी है वर्तमान समय में नारी को शीर्ष स्थिति तक पहुँचाने के पीछे देव दयानन्द का ही अथक प्रयास रहा है।

रामायण की सीता, महाभारत की द्रौपदी से लेकर मन्दिरों की देवदासी, शृंगार साहित्य की नायिका व सती प्रथा की सताई हुई परवश नारी को समाज ने विभिन्न निम्नस्थानीय व निन्दनीय रूपों में जकड़ रखा था। क्षुद्र बनी नारी जाति चूल्हा चौका, जिस्मफरोशी, बलि प्रथा, बालविवाह व विधवा जीवन के संतप्त जीवन से अपने आपको बाहर नहीं निकाल पा रही थी। सर्व प्रथम ऋषिप्रवर दयानन्द सरस्वती ने ही पूज्या मातृशक्ति को इन सब से बाहर निकालकर उसे प्रकाश पुंज व सूर्य का दर्शन कराने वाली कहा। सचमुच उस प्यारे ऋषि का नारी उत्थान के क्षेत्र में किया गया कार्य सदैव स्तुत्य व प्रशस्य रहेगा। युग द्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अपनी रचनाओं में सामान्य नारी विमर्श ही नहीं अपितु उसके सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, आर्थिक व प्रबल राष्ट्रवादिनी आदि विविध रूपों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। स्वदेश ही नहीं अपितु विदेशों के भी मूर्धन्य दर्शनिकों, साहित्यकारों एवं विद्वानों ने स्वामी जी को मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए वर्तमान में उनके कार्यों की प्रासंगिकता को स्वीकारा है। महर्षि दयानन्द जी के अनुसार महाभारत काल से पूर्व तक हमारा देश भारतवर्ष शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से प्राचीनतम और सर्वोन्नत देश माना जाता है इसलिए समस्त भूमण्डल इस देश को विश्वगुरु मानता रहा है। भारत वर्ष की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए महर्षि मनु ने घोषणा की थी-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

उस समय नारी की दशा अत्यन्त सम्मानित व प्रतिष्ठित थी। वैदिक साहित्य में लगभग २५ मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाओं का वर्णन है। गार्गी, मैत्रेयी, अनुसूया, मदालसा, लोपामुद्रा, सावित्री आदि प्रमुख है।

महाभारत काल से इस देश का सभी क्षेत्रों में पतन प्रारम्भ हुआ जिससे नारी की दशा भी उत्तरोत्तर निम्न होती चली गई। नारी को वेदाध्ययन से दूर रखा गया। उसे 'नरक का द्वार' जैसे अति निन्दनीय विशेषण दे डाले। महर्षि दयानन्द पहले समाज सुधारक थे जिन्होने नारी उत्थान की क्रान्ति को जन्म दिया। उन्हीं की प्रेरणा से उनके परम भक्त व अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अमर शिष्यों ने कन्या पाठशाला व कन्या गुरुकुल खुलवाये। भारत की नारियाँ युग-युगों तक ऋषि उपकारों की ऋणी रहेंगी क्योंकि उन्हीं की वजह से आज हम समाज में गौरवान्वित हैं। स्वामी दयानन्द द्वारा प्रारम्भ नारी जागृति का यह अभियान तभी सार्थक होगा जब हम समस्त मातृशक्ति बालक की प्रथम शिक्षिका बनने से लेकर समस्त सामाजिक चेतना तक उसे उचित दिशा देने का मुख्य दायित्व वहन करें।

'प्रवक्ता संस्कृत' फरीदाबाद
(हरियाणा)
चलभाष-९९४२९८९६३

कुरान को सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में अनुवाद (translate) कराने का श्रेय महर्षि दयानंद को है

-अरविन्द मलिक आर्य

स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सर्वप्रथम अपनी आत्म-कथा लिखी।इस आत्म-कथा के हिन्दी में होने के कारण हिन्दी को ही इस बात का गौरव है कि आत्म-कथा साहित्य का शुभारम्भ हिन्दी व स्वामी दयानन्द से हुआ।

स्वामी दयानन्द के समय तक वेदों का भाष्य- व्याख्यायें- प्रवचन-लेखन-शास्त्रार्थ आदि संस्कृत में ही होता आया था।महर्षि पहले व्यक्ति हैं,जिन्होंने वेदों का भाष्य जन-सामान्य की भाषा संस्कृत सहित हिन्दी में किया। यह घटना जहां वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा से जुड़ी है,वहीं भारत की एकता व अखण्डता से भी जुड़ी है।

न केवल वेदों का ही उन्होंने हिन्दी में भाष्य किया,अपितु मनुस्मृति एवं अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों का अपनी पुस्तकों में उल्लेख करते समय उद्धरणों के हिन्दी में अर्थ भी किए हैं।

उन्होंने वेदों का हिन्दी में भाष्य करके पौराणिक हिंन्दू समाज से ब्राह्मणों के शास्त्राध्ययन पर एकाधिकार को समाप्त करके जन-जन को इसका अधिकारी बनाया।यह कोई छोटी बात नहीं,अपितु बहुत बड़ी बात है,जिसका मूल्याकंन नहीं किया जा सकता।

महर्षि दयानन्द के प्रयासों से ही आज हिन्दू व अन्य समाज की किसी भी जन्मना जाति, मत व सम्प्रदाय का व्यक्ति वेद एवं समस्त शास्त्रों का अध्ययन कर सकता है।

स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि धर्म,दर्शन एवं संस्कृति जैसे कठिन व विशिष्ट विषय को सर्वप्रथम उनके द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत कर उसे समस्त मनुष्यों के लिए उपलब्ध कराया गया,जबकि इससे पूर्व इन विषयों पर परिस्थितिवश संस्कृत पर पूर्ण अधिकार न रख सकने वाले ब्राह्मण वर्ग का ही एकाधिकार था, इन्होंने स्वार्थवश या अज्ञानतावश इन विषयों को संकीर्ण एवं संकुचित कर दिया था और जिस कारण वेदों का लाभ जनसाधारण को नहीं मिल रहा था, जिसके कि वह अधिकारी थे।

महर्षि को हिन्दी भाषा के लिये प्रेरित करने वालों में कोई हिन्दी भाषी नहीं,अपितु एक बंगाली सज्जन श्री केशवचन्द्र सेन थे।स्वामी दयानन्द जी को श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनायें। स्वामी दयानन्द जी ने तत्काल यह सुझाव स्वीकार कर लिया।यह दिन हिन्दी के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी कि जब एक ४७ वर्षीय गुजराती मातृभाषा के संस्कृत के विश्वविख्यात वैदिक विद्वान स्वामी दयानन्द ने तत्काल हिन्दी को अपना लिया।ऐसा दूसरा उदाहरण इतिहास में अनुपलब्ध है।इसके पश्चात स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रवचन किए उनमें वह हिन्दी का प्रयोग करने लगे।

हुआ यूँ था कि स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी, लेकिन उनका अध्ययन-अध्यापन संस्कृत में हुआ था, इसी कारण वह संस्कृत में ही वार्तालाप, व्याख्यान, लेखन, शास्त्रार्थ तथा शंका-समाधान आदि किया करते थे। १६ दिसम्बर, १८७२ को स्वामी जी वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता पहुंचे थे और वहां उन्होंने अनेक सभाओं में व्याख्यान दिये।एक सभा में गवर्नमेंन्ट संस्कृत कालेज, कलकत्ता के उपाचार्य पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न स्वामी दयानन्द के संस्कृत भाषण का बंगला में अनुवाद कर रहे थे।उन्होंने ने अनेक स्थानों पर स्वामी जी के व्याख्यान को सही अनुवादित न कर उसमें स्वार्थवश या अज्ञानतावश अपनी विपरीत मान्यताओं को भी प्रकट किया था, जिससे संस्कृत कालेज के श्रोताओं ने उनका विरोध किया। विरोध के कारण श्री महेश चन्द्र न्यायरत्न को बीच में ही सभा छोड़कर जाना पडा था। इस घटना के बाद स्वामी दयानन्द जी को बंगाल के श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनायें। जिससे धर्म के प्रचार में तेजी आये, क्योंकि हिन्दी को ज्यादा लोग समझते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने इस कारण ही तत्काल यह सुझाव स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा कि आर्यावर्त्तत (भारत वर्ष का प्राचीन नाम) भर में भाषा का एक्य सम्पादन करने के लिए ही उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों को आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखा एवं प्रकाशित किया है।

सन् १८८२ में ब्रिटिश सरकार ने डा. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा।यह आयोग हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। उन दिनों सरकारी कामकाज में उर्दू-फारसी एवं अंग्रेजी का प्रयोग होता था, स्वामी दयानन्द के सन् १८७२ से १८८२ तक व्याख्यानों, ग्रन्थों, शास्त्रार्थों तथा आर्य संगठन द्वारा वेद प्रचार एवं उसके अनुयायियों की हिन्दी निष्ठा से हिन्दी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन इण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की।

स्वामी जी ने अपने जानने वालों को पत्र लिखा,''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड़ जावेगी।'' स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरुप देश के कोने-कोने से आयोग को बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेज गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास की अद्वितीय घटना है।

भारतवर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने पराधीन भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकर मन, वचन व कर्म से इसका प्रचार-प्रसार किया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि हिन्दी शीघ्र लोकप्रिय हो गई।

स्वामी दयानन्द के द्वारा हिन्दी भाषा के लिए ७७ वर्ष पूर्व आरम्भ किए गये कार्यों व उनकी पश्चात काम करने वाली प्रेरणा के दीर्घकालीन प्रभाव के कारण ही स्वतंत्र भारत में १४ सितम्बर १९४९ को सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया।

इस्लाम की धर्म-पुस्तक कुरआन को हिन्दी में सबसे पहले अनुदित (translate) कराने का श्रेय भी स्वामी दयानन्द जी को है। यह अनुदित ग्रन्थ उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकरिणी सभा, अजमेर के पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित है।

कुछ लोग स्वार्थवश इतने मूर्ख हैं कि कुरान का खंडन भी करते हैं और महर्षि को गालियाँ भी देते हैं। उन्हें शायद ये भी नहीं पता कि कुरान की वास्तविकता को दुनिया के सामने सबसे पहले महर्षि ही लाये थे। पश्चात जितनी भी पुस्तकें लिखी गई, सबकी शैली महर्षि से प्रेरित ही हैं।

पृष्ठ....४ का शेष....

मुस्कान से जुड़े रहते हैं, वही अपने आस-पास को जोड़ सकते हैं। वे मन ही मन रो भी लेते हैं, तो भी जोड़ने के कार्य को नहीं छोड़ते हैं। कई लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी मित्र से मिलने जाते हैं सोचते हैं मित्र के यहाँ तो खायेंगे ही, इसलिये न घर से खाकर निकलते हैं और ना मार्ग में स्वल्पाहार ही करते हैं। ऐसे ही एक सज्जन मित्र के घर हम पहुँचे। मित्र तो बाहर कार्य में व्यस्त थे, उनकी प्रतीक्षा में पत्नी ने सबके लिये सुस्वादु भोजन बनाकर रखा। पति को आने में विलम्ब हुआ। आगन्तुक ने भोजन की माँग कर दी। पत्नी उन्हें भोजन कराने लगी। वह महाशय घर में बना सारा भोजन शनैः शनैः खा गए। यह देखकर चार-पाँच वर्ष का बच्चा भूख से रोने लगा। उसकी माँ बोली ''बेटे अकेले क्यों रोता है, मेहमान को जाने दे, सब साथ में मिलकर रोयेंगे। उत्साहवर्धन में जहाँ हँसने मुस्कराने का महत्त्व है, सान्त्वना व धैर्य धारण करने में कुछ-कुछ रोना भी काम आ जाता है।''

रहिमन रहिला की भली जो परसत चित लाये। परसत मन मैला करे वह मैदा जरिजाय।।''

किसी भी मेहमान को ही नहीं, गृहवान को भी परसने वाली गृहिणी के मन का आंकलन करके भोजन की अपेक्षा करनी चाहिये। दम्पत्ति को अपनी सुखद जीवन यात्रा रेलयात्रा होने से बचाते रहना चाहिये। प्रथम श्रेणी के शयनयान में संकुचित कक्ष के अन्दर अगल-बगल की शायिकाओं पर दो यात्री सोते हैं, गन्तव्य आने पर उतर कर चले जाते हैं, फिर कभी शायद ही वे स्वप्न में भी आते हो। चतुर्वेद पारायण, वेद पारायण, शतक पारायण, बहु कुण्डीय यज्ञों में दी जाने वाली लाखों आहुतियां कहीं निरुद्देश्य-निरर्थक तो नहीं चली जाती हैं, जैसे उस दिन कम्बल विक्रेता की श्रम-चेष्टा व्यर्थ चली गयी थी। हुआ यह कि एक श्रीमती जी उसकी दुकान पर आकर बैठ गयी और कम्बल देखने लगी। दुकानदार एक-एक कम्बल उन्हें दिखाता जाए और वह नापसंद करती जाए। अन्ततः उसने पूछ ही लिया- ''आपको कैसा कम्बल चाहिये बहन जी?'' देवी जी ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया- ''वास्तव में मैं अपने पति की प्रतीक्षा कर रही हूँ। उन्होंने यहीं मिलने को कहा था। दुकानदार बोला, सारे कम्बल तो दिखा दिये, दो बचे हैं, चलिये उन्हें भी देख लीजिये, शायद इनमें आपके पति निकल आयें। कम्बलों की इस उलट-पुलट की भाँति-यजमान तुम्हारी आहुतियों का यही हाल न हो जाये, जहाँ अग्न्याधान और हविष्य प्रदान तो हो, और जहाँ महिमावान् देवताओं की पहचान व मुस्कान के बिना, दम्पत्ति तुम्हारा जीवन सुनसान न रह जाये। देखिये, होने वाले नवदम्पत्ति कुछ ऐसा ही सोच रहे हैं। अत्यन्त शोभा सज्जित सुरम्य विवाहसदन शुभ-समागम में वर एवं कन्या की भेंट एकान्त में हो गयी। कन्या बोली- प्रिय, हम दोनों की जिन्दगी में आज का दिन सबसे अधिक खुशी का है।'' लड़के ने कहा, ''पर प्रिये, हमारी शादी तो कल हो रही है। तभी तो मैं आज का दिन कह रही हूँ।

प्रायः उक्तानुसार हो भी जाता हैः जिसे मुस्कान व सहनशक्ति से कोई पति संभाल भी लेता है। खाना खाते समय एक दिन पत्नी ने पति से कहा- 'एजी, आपके व्यवहार में जब पहले से कितना बदलाव आ गया है। पहले आप अपनी थाली से सब्जियाँ उठा उठाकर मेरी थाली में रखते जाते थे, अब ऐसा नहीं करते। क्या मैं अब सुन्दर नहीं रही। नहीं प्रिये, यह बात नहीं है, अब तो मैं तुम्हें पहले से अधिक प्यार करने लगा हूँ - दरअसल अब तुमको सब्जी बनानी आ गयी है। जहाँ दाल सब्जी में नमक न्यूनाधिक होने पर थाली फेंक ताण्डव होने लगता हो, वहां पति-पत्नी की सहनशीलता परस्पर मुस्कान का आह्वान करने वाली होती है। यही मुस्कान दम्पत्ति को व्यावहारिक नवाचार का प्रतिमान बनाये रखकर अपनी व जग का कल्याण कराने वाली होती है। हँसिये और मुस्कुराये दाम्पत्य सफल सुन्दर बनाइये।

''आवश्यकता आविष्कार की जननी है' तो 'उपयोगिता नवाचार की भगिनी है। आविष्कार का क्षेत्र वैज्ञानिक नव निर्माण तक सीमित होता है, जबकि नवाचार की परिधि असीमित होती है। नवचार-वस्तुओं में ही नहीं व्यक्तियों के चरित्र में भी सौम्यता एवं स्नेह की सम्प्रेषण कर उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाये रखता है। दाम्पत्य जीवन के उपरोक्त प्रसंग इसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं। (साभार आर्य जगत)

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

ईश्वर के सच्चिदानन्द स्वरूप पर विचार

-डॉ० विवेक आर्य

सच्चिदानन्द। यह शब्द तीन शब्दों से बना हैं। सत्‌चित्‌ आनन्द। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में इस शब्द का प्रयोग ईश्वर के अनेक नामों की व्याख्या में किया हैं।

सत्‌ शब्द पर विचार–

स्वामी दयानन्द लिखते है– (अस भुवि) इस धातु से 'सत्‌' शब्द सिद्ध होता है। 'यदस्ति त्रिषु कालेषु न बाधते तत्सद्‌ ब्रह्म' जो सदा वर्तुतमान अर्थात्‌ भूत, भविष्यत्‌, वर्तुतमान कालों में जिसका बाध न हो, उस परमेश्वर को 'सत्‌' कहते हैं।

वेदों में सत्‌ शब्द यजुर्वेद के ३२/८ मन्त्र में मिलता है।

वेनस्‌ तत्‌ पश्यन्‌ निहितम्‌ गुहा सद्‌ (सत्‌) अत्र विश्वं भवत्येकनिडम्‌

अर्थात ब्रह्मज्ञानी पुरुष ही बुद्धिरूपी गुफा में स्थित उस ब्रह्मा को (सत्‌) ''जो तीनों कालों में विद्यमान है'' प्रत्यक्ष अनुभव करता है। जिस ब्रह्मा में सारा संसार एक आश्रय को प्राप्त होता है।

अगले मन्त्र में भी सत्‌ शब्द आया है विभृतं गुहा सत्‌ अर्थात वेद धारक विद्वान ही गुहा में (सत्‌) सदा विद्यमान भगवान्‌ के विषय में उपदेश कर सकता है।

गीता श्लोक १७/२६ में भी सत्‌ शब्द का वर्णन मिलता है–

सद्भावे साधुभावे च
सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः (सत्‌ शब्दः) पार्थ युज्यते।।१७.२६।।

अर्थात हे पार्थ सत्य भाव व साधुभाव में सत्‌ शब्द का प्रयोग किया जाता है? और प्रशस्त (श्रेष्ठ शुभ) कर्म में सत्‌ शब्द प्रयुक्त होता है।।

छान्दोग्योपनिषद ८६३६५ में तद्यत्‌ सत्‌ तदमृतम में सत्‌ शब्द का प्रयोग ब्रह्मा के लिए हुआ है।

इस प्रकार से वैदिक वांग्मय में शब्द का प्रयोग हुआ है।

चित्‌ शब्द पर विचार–

स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखते है– (चिती संज्ञाने) इस धातु से 'चित्‌' शब्द सिद्ध होता है। 'यश्चेतति चेतयति संज्ञापयति सर्वान्‌ सज्जनान्‌ योगिनस्तच्चित्परं ब्रह्म' जो चेतनस्वरूप सब जीवों को चिताने और सत्याऽसत्य का जनानेहारा है, इसलिए उस परमात्मा का नाम 'चित्‌' है।

अथर्ववेद १८/४/१४ में ईजानशिचितमारूक्षदग्निं नाकस्य में चित्‌ शब्द आया है। यहाँ वेद सन्देश दे रहे है कि सुख के आधार से प्रकाश की ओर उठने की इच्छा करनेवाला परमात्मा भक्त सर्वाग्नि चित्‌=चेतन भगवान्‌ को प्राप्त करना चाहता है।

निरुक्त ५/७ में चित्‌ शब्द को निरुक्तकार ने निपात भी माना है और नाम भी। यहाँ पर नाम शब्द होने से यह शब्द भगवान्‌ के लिए प्रयुक्त हुआ है।

आनन्द शब्द पर विचार–

स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है–

(टुनदि समृद्धौ) आङ्पूर्वक इस धातु से 'आनन्द' शब्द बनता है। 'आनन्दन्ति सर्वे मुक्ता यस्मिन्‌ यद्वा यः सर्वांजीवानानन्दयति स आनन्दः' जो आनन्दस्वरूप, जिस में सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और सब धर्मात्मा जीवों को आनन्दयुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम 'आनन्द' है।

तैतरीय उपनिषद्‌ ३/६ में आनन्दात्‌ ह्येव मिलता है। जिसका अर्थ है स्वयं आनंद स्वरुप होने से तथा अन्यों को आनंद प्रद होने से आनंद कहाने वाले भगवान्‌ से ही यह सम्पूर्ण जगत उत्पन्न होता है। आनंद से ही इसकी स्थिति है और वे ही आनंद इसके प्रलय के कारण हैं और यह आनंद ब्रह्मा है।

वृहदारण्यक उपनिषद्‌ ३/९/२८ में विज्ञानं आनंद ब्रह्मा आनंदमय ब्रह्मा सबसे बड़ा है सन्देश दिया गया है।

वेदांतसूत्र १/१/१२ में आनंद मयो अभ्यासात में आनंद शब्द आया है।

इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को 'सच्चिदानन्दस्वरूप' कहते हैं।

सत्‌ प्रकृति को भी कहते है। कोई भी वह पदार्थ जो शाश्वत रहने वाला हो, वह जड़ हो या चेतन, सत्‌ कहलाता है। प्रकृति भी अनादि और अजा है अतः सत्‌ कहलाती है। जीवात्मा भी सत्‌ है किन्तु साथ में चित्‌ भी है। प्रकृति केवल मात्र जड़ पदार्थ है। जीवात्मा सत्‌ और चेतन दोनों हैं। जीवात्मा अनादि, अमर, अजर आदि रूप के साथ चेतन भी है। इसलिए जीवात्मा सच्चित भी कहलाता है।

परमात्मा सच्चिदानन्द अर्थात सत्‌चित्‌ आनन्द तीनों है। केवल ईश्वर ही आनंद स्वरुप है। इसलिए ईश्वर का नाम सच्चिदानन्द है। यही आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर की परिभाषा में प्रयुक्त हुआ है। स्वामी विद्यानंद के अनुसार सच्चिदानन्द शब्द रमोत्तरतापिनी उपनिषद्‌ में हुआ है। भावेश मेरजा जी के अनुसार तेजोबिन्दु उपनिषद्‌ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

आईये सच्चिदानन्द स्वरुप परमात्मा की उपासना कर जीवन को आनंदमय बनाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

(सत्यार्थ प्रकाश- स्वामी दयानन्द
यजुर्वेद भाष्य- स्वामी दयानन्द
उपनिषद्‌ रहस्य-महात्मा नारायण स्वामी
सत्यार्थ भास्कर-स्वामी विद्यानन्द
वैदिक सिद्धांत रत्नावली-प्रोफेसर सत्यपाल शास्त्री
अष्टोत्तरशतनाम मालिका- विद्यासागर शास्त्री।)

●●●

पृष्ठ....१ का शेष....

समुल्लास में किया। बौद्ध और जैन मत की तर्कहीन मान्यताओं को १२वें समुल्लास में और यवनमत की मान्यताओं की बखिया ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम १४वें समुल्लास में उधेड़ी।

हिन्दू धर्म (पौराणिकों) की सबसे गर्हित और समाज को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े करने वाली सबसे गर्हित औरखतरनाक मान्यता थी, ''स्त्री शूद्रों नाधीयाताम्‌'' अर्थात्‌ स्त्री और शूद्रौ को पढ़ने (वेद) का निषेध है।

ऋषि दयानन्द ने वैदिक प्रमाण ''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः'' इत्यादि वैदिक प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्त्री और शूद्र (निम्न वर्ग) के सभी लोगों को अध्ययन (वेदादि शास्त्रों) का अधिकार का विधान वेद स्पष्ट शब्दों में करता है। यह भी महिला शक्ति और जन शक्ति को संगठित करके एकसूत्र में बांधने की क्रान्ति का आन्दोलन जो ऋषि दयानन्द ने सन्‌ १८७५ में ही सत्यार्थप्रकाश में घोषित किया। इतना ही नहीं, आर्यसमाज जिसकी नींव ऋषि ने सन्‌ १८७५ में मुम्बई में रखी, उसके छठे नियम में घोषित किया कि ''संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात्‌ शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति।'' अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा में सन्‌ १८८३ में ''अनाथों की सहायता और उनका उत्थान करना सभा का प्रथम उद्देश्य है। महिलाओं में समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिये ऋषि ने प्रचलित प्रवृत्त किये। कृषकों (किसानों) को राजाओं का राजा उद्घोषित किया। अपने देश की स्वतन्त्रता और अपने देश का शासक राजा को विदेशियों के शासन को उखाड़ फेंकने का बिगुल ऋषि ने अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध सत्यार्थप्रकाश में फूंका। ह्यूम नामक विदेशी व्यक्ति ने कांग्रेस की नींव तो बहुत बाद में डाली अतः अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले और जेलों में जाने वाले ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे। निजाम के विरुद्ध चलाया गया हैदराबाद सत्याग्रह पूर्णतः आर्यसमाज द्वारा चलाया गया। इन्हीं सब क्रान्तिकारी योजनाओं की घोषणा के साथ ऋषि ने आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य'' नारा दिया, जो कृण्वन्तो विश्वमार्यम्‌ की क्रियात्मक व्याख्या थी। इसी शंखनाद के नारे की पृष्ठभूमि सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में वर्णित वो राजनीतिक सिद्धान्त हैं और उन सभी राजनैतिक सिद्धान्तों का आधार यहीं शंखनाद है जिसकी ध्वनि आर्यसमाज को सदैव जागरूक और अमर रखेगी।

ऋषि दयानन्द ने अपना मिशन केवल लेखन कार्य तक सीमित नहीं रखा, अपितु शास्त्रार्थ की प्राचीन परम्परा को भी चालू किया जो भारत के दर्शनशास्त्रों वर्षों तक चलती रही और जो कालचक्र के चलते मृतप्रायः हो गई थी। शास्त्रार्थ एक ऐसा अमोघ अस्त्र था जा श्रोता दर्शकों पर तत्काल प्रभाव डालता था और जिसमें प्रतिद्वन्द्वी तत्काल हार मानकर निरुत्तर हो जाता था।

पाठक समझ सकते हैं कि वह युग कैसा रहा होगा जिसमें निरन्तर युक्ति तर्क और प्रमाणों के बाण चलाते थे। ऋषि दयानन्द केवल वेद को ही स्वतः प्रमाण मानते, अन्य शास्त्र वेद के अनुकूल होने पर ही प्रामाणिक कोटि में आते थे। अतः ऋषि दयानन्द ने वेदों का भाष्य करना प्रारम्भ किया। ऋषि ने अपने वेदभाष्य की प्रामाणिकता अपनी ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में स्थापित की।

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों का इस अत्यन्त संक्षिप्त लघु लेख में नामोल्लेख करना भी असम्भव है। ऋषि के इस अथक भगीरथ प्रयास का परिणाम यह हुआ कि आर्यमसाज न केवल भारत में ही अपितु आर्यसमाजों का जाल की तरह विस्तार सात समुद्र पार विदेशों में भी होने लगा। देश और विदेशों में ओम्‌ की ध्वजा फहराने लगी और समूचा वातावरण ऋषि दयानन्द की जय, 'वैदिक धर्म की जय' इत्यादि गगनभेदी जयकार के नारों से गुंजायमान रहने लगा। यह समग्र प्रयास ऋषि के महान्‌ मिशन ''आर्यों का सर्वभौम साम्राज्य'' की ओर बढ़ते हुये कदमों का संकेत था। ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने गहरा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आ सका। ऋषि का यह कष्ट सूचक वाक्य था।

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कारनामों के प्रसङ्ग में यह भी उल्लेखनीय है कि समाज में प्रचलित श्राद्ध प्रथा, विधवाओं की दासी प्रथा और महिला तथा शूद्र कहे जाने वो श्रमिक वर्ग का मन्दिरों में प्रवेश निषेध की समाज को काटने और टुकड़े-टुकड़े में बाँटने वाली भयंकर प्रथा का तीव्र विरोध और खण्डन किया तथा समाज को टूटने से बचाकर जोड़ने की प्रबल शक्ति हिन्दू कहे जाने वाले समाज में उजागर की।

ये सभी कार्य आर्य साम्राज्य के दुर्ग की नींव (आधारशिला) रखने के थे। किन्तु वाह रे कराल काल, और देश का दुर्भाग्य ! महर्षि दयानन्द महाराजा जोधपुर के यहां रहते हुए वेदभाष्य कर रहे थे। एक दिन महर्षि ने महाराजा जोधपुर को उनके महल में नन्हीं जान नामक वेश्या के साथ देखा। महर्षि ने तुरन्त महाराजा जोधपुर को कहा, शेरों की मांद में कुतिया का निवास ! तभी से वेश्या के दिल में महर्षि को मारने का प्रबल विचार घर कर गया। वेश्या ने महर्षि के पाचक जगन्नाथ को अपने विश्वास में लेकर महर्षि को विष देने का षड्यन्त्र रचा।

पाचक जगन्नाथ ने वेश्या की योजना के अनुसार महर्षि दयानन्द को दूध में विष मिलाकर पिला दिया। विष इतना भयंकर था कि महर्षि के शरीर में फूट-फूट कर निकलने लगा। चिकित्सों की चिकित्सा भी विफल हो गई। महर्षि को जोधपुर से आबू होते हुये अजमेर लाया गया। उत्तम कोटि के माने जाने वाले चिकित्सक भी इलाज करने में विफल हो गये। महर्षि को अजमेर में भिनाय की कोठी में रखा गया सभी चिकित्सक विष की भयंकरता की और विष के कारण होने वाली भयंकर पीड़ा तथा महर्षि को ऐसी भयंकर पीड़ा में भी उफ तक न करते हुये देखकर अत्यन्त विस्मित थे। महर्षि के शरीर से विष फूट-फूट कर निकल रहा था। अन्ततोगत्वा ३० अक्टूबर सन्‌ १८८३ का दिन आया। लाहौर से महर्षि के भक्त दर्शनार्थ आये हुये थे। सायंकाल का समय था। महर्षि ने सब भक्तों को अपने कमरे से बाहर जाने को कहा केवल एक नवयुवक को अपने पास रखा जिसका नाम था गुरुदत्त। गुरुदत्त महर्षि का कट्टर भक्त होते हुये भी नास्तिक था। सूर्य अस्त होने को आया, वह दीपावली का दिन था। महर्षि ने अपने अन्तिम समय में कहा प्रभो ! तुम ने अच्छी लीला की तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह कहते हुये महर्षि ने निर्वाण किया। समूचा देश दीपावली के दीपों से प्रकाशित हो गया किन्तु विश्व का एक महान्‌ सूर्य अस्त हो गया। गुरुदत्त महर्षि की इस अन्तर्वासी (शब्दावली) को सुनकर और महर्षि की इस अन्तिम अवस्था को देखकर मानो जाप से इतने प्रभावित हुये कि कट्टर नास्तिक से कट्टर आस्तिक बन गये। ऋषि के मिशन को पूरा करने का गुरुदत्त ने बीड़ा उठा लिया। अब वे पं. गुरुदत्त विद्यार्थी बन गये, ऋषि के मिशन को पूरा करने की धुन में मानो पागल हो गये हों। उनके मिशन का अन्तिम पड़ाव वही था, आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य अर्थात्‌ ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्‌'' अथवा समग्र क्रान्ति।

(साभार-परोपकारी)

●●●

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६४१५३६५५७६, सम्पादक-६४५१८८१६७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की विभिन्न जय जय कालोनियों में महिला यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

समारोह पूर्वक हो रहे संपन्न

२० स्थानों पर सैकडों महिलाएं यज्ञ कराने में हुई सक्षम

भविष्य में यज्ञ के बड़े आयोजनों का नेतृत्व करेंगी प्रशिक्षित याज्ञिक महिलाए–विनय आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सैकडों सेवा प्रकल्पों में नारी जाति के सम्मान और उत्थान को हमेशा विशेष महत्व दिया जाता रहा है। जिसमें महिलाओं को स्वरोजगार, स्वावलम्बन और सशक्तिकरण के कई अभियान चलाए जा रहे हैं। इसक्रम में दिल्ली में स्थिति जय-जय कालोनियों में सभा के सम्वर्धक घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ, के अन्तर्गत वैदिक विधि से संस्कार और यज्ञ कराने का अभियान तो चला ही रहे हैं, इसके साथ ही अब एक नई पहल करते हुए वहां की महिलाओं को यज्ञ का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। दिल्ली में लगभग २० स्थानों पर महिलाओं के यज्ञ प्रशिक्षण शिविर पिछले डेढ महीनों से लगातार चल रहे हैं। इन शिविरों में यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं द्वारा सामूहिक यज्ञों के आयोजन समारोह पूर्वक किये जा रहे हैं। जिनमें स्त्री, पुरुष और बच्चे बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं और एक अत्यंत उत्साह का वातावरण निर्मित हो रहा है। अभी पिछले दिनों पश्चिमी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, मध्य दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर आयोजित यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षित महिलाओं ने यज्ञ संपन्न कराए। इन यज्ञों में सभा महामंत्री विनय आर्य जी, बृहस्पति आर्य जी और दिल्ली वेद प्रचार मण्डलों तथा आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। प्रशिक्षित याज्ञिक महिलाओं को सभा की ओर से स्मृति चिन्ह देकर संम्मानित किया गया। श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर उपस्थित प्रशिक्षित महिलाओं, प्रचारकों, यजमानों और सभी आयु वर्ग के महानुभावों को संबोधित करते हुए इस रचनात्मक और कल्याणकारी कार्य के लिए बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। आपने अपनी प्राचीन यज्ञीय संस्कृति का प्रमाण देते हुए यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप को सरलता से समझाया और भविष्य में यज्ञों के बड़े आयोजनों में प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा यज्ञ का नेतृत्व करने की बात कही। सभी स्थानों पर प्रेम सौहार्द के वातावरण में यज्ञ के कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुए और सभी ने एक दूसरे को बधाई दी।

दोषों को दूर करें

-स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

लोग अपना भविष्य अच्छा तो बनाना चाहते हैं, परंतु अपनी गलतियां न सुनना चाहते हैं, न समझना चाहते हैं, न ही स्वीकार करते हैं, और न ही उन्हें सुधारने का कोई पुरुषार्थ करते हैं।'' आप सोचिए, ऐसी स्थिति में उनका भविष्य अच्छा कैसे बनेगा? नहीं बनेगा।

मेरी दृष्टि में तो यह अत्यंत ही मूर्खता की स्थिति है, और अधिकांश लोगों की स्थिति ऐसी ही है। ''जो व्यक्ति अपनी गलतियां नहीं सुनता, उन्हें दूर करना नहीं चाहता, वह सदा भ्रांतियों में ही जीता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता।'' ''इसलिए मैं आपसे बार-बार निवेदन करता हूं, विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं, कि अपने हठ दुराग्रह और अभिमान आदि दोषों को छोड़ें। अपनी गलतियों को प्रेम से सुनें, उन्हें समझने का प्रयास करें। उन्हें स्वीकार करें, और फिर उन्हें दूर करने के लिए पूरा पुरुषार्थ करें, तभी आपका भविष्य अच्छा बन सकता है, अन्यथा जीवन भर आप दुखी रहेंगे। और इसके सबसे बड़े जिम्मेदार आप स्वयं होंगे।'' ''अपनी गलतियों के कारण से होने वाले दुखों का दोष दूसरों पर लगाना, न तो बुद्धिमत्ता है और न ही न्याय।''

''अतः स्वयं को धोखा न दें। भूतकाल की गलतियां बार-बार न दोहराएं, बल्कि उनका सुधार करें, तभी आपका भविष्य अच्छा बनेगा।''

''यदि आप अपनी गलतियों को ठीक कर भी लेंगे, तो किसी दूसरे पर एहसान नहीं होगा। आपका स्वयं पर ही एहसान होगा। इसलिए यदि आप स्वयं को बहुत बुद्धिमान मानते हों, तो अपने ऊपर एहसान करें, अपने दोषों को दूर करें, और अपना कल्याण करें।''

-निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात।

कौन ईश्वर को प्राप्त हो सकते हैं?

Tenacity and perseverance lead one to God realization

-भावेश मेरजा

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत।।

-ऋग्वेद : मंडल ६, सूक्त ८३, मन्त्र १

अर्थ : हे ब्रह्माण्ड और वेदों के पालन करने वाले प्रभु, सर्वसामर्थ्ययुक्त सर्वशक्तिमन् !

आपने अपनी व्याप्ति से संसार के सब अवयवों को व्याप्त कर रक्खा है।

उस आपका जो व्यापक पवित्र स्वरूप है, उसको ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण, शम, दम, योगाभ्यास, जितेन्द्रिय, सत्संगादि तपश्चर्या से रहित जो अपरिपक्व आत्मा अन्तःकरणयुक्त है, वह उस तेरे स्वरूप को प्राप्त नहीं होता और जो पूर्वोक्त तप से शुद्ध हैं, वे ही इस तप का आचरण करते हुए उस तेरे शुद्ध स्वरूप को अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं।

(स्रोत : महर्षि दयानंद सरस्वती जी रचित सत्यार्थ प्रकाश का ११वां समुल्लास।)

क्रमशः.......७ पर

''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'' (यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है) ओ३म् ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' (सम्पूर्ण संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ)

आर्य समाज रसौली जिला बाराबंकी का 89 वाँ वार्षिकोत्सव

स्थान : रसौली बाजार, बाराबंकी
पौष कृष्ण तृतीया, चतुर्थी एवं पंचमी संवत् 2081, दिन बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार
तदनुसार दिनांक 18,19 व 20 दिसम्बर 2024

प्रिय बन्धुओं एवं पूज्या मातृशक्ति, सादर नमस्ते

विदित हो कि परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से विगत वर्षो की भाँति, आर्य समाज रसौली सत्य सनातन वैदिक धर्म एवं सद्विचारों के प्रचार–प्रसार हेतु, अपना 89 वाँ वार्षिकोत्सव उपरोक्त तिथियों में समारोह पूर्वक मना रहा है। उत्सव में श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा, आचार्य रामप्रसाद जी (अकबरपरु) पं0 राजेश आर्य (मैनपुरी) व पं0 राम मगन आर्य (सुल्तानपुर) भजनोपदेशक, पं0 सर्वमित्र शास्त्री (लखनऊ) आचार्य सत्य प्रकाश आर्य आदि कई विद्वान पधार रहे है।

आपसे सादर प्रार्थना है कि आप अपने जीवन के अमूल्य समय मे से कुछ समय निकाल कर इस परम पावनी आध्यात्म धारा में स्नान करके परम शांति एवं दिव्य आनन्द का लाभ प्राप्त करें।

दिनांक	कार्यक्रम	समय
18 दिसंबर बुधवार	यज्ञ, भजन, प्रवचन	प्रात : 8 बजे से 11 बजे तक
	भजन–प्रवचन	सायं 7 बजे से 10 बजे तक
19 दिसंबर बृहस्पतिवार	पंचकुण्डीय यज्ञ, भजन–प्रवचन	प्रात : 8 बजे से 11 बजे तक
	महिला सम्मेलन	मध्यान्ह 2 बजे से 5 बजे तक
	गौरक्षा सम्मेलन	सायं 7 बजे से 10 बजे तक
20 दिसंबर शुक्रवार	पंचकुण्डीय यज्ञ, भजन–प्रवचन	प्रात : 8 बजे से 11 बजे तक
	मद्य निषेध सम्मेलन	मध्यान्ह 2 बजे से 5 बजे तक
	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	सायं 7 बजे से 10 बजे तक

पंच कुण्डीय यज्ञ के यजमान

श्री अशोक कुमार अग्रवाल (वाराणसी), श्री राम कुमार श्रीवास्तव (प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री राजीव कुमार अवस्थी (बाराबंकी), श्री अरविन्द सिंह (एडवोकेट), श्री वीरेन्द कुमार (रिटा0एस0टी0 बाबू), श्री राम नरायन आर्च, श्री अर्जुन यादव, श्री रामचन्द्र अग्रवाल, श्री दिनेश चन्द्र आर्य, श्री सुधीर कुमार सक्सेना, श्री गुरूनरायन श्रीवास्तव एवं ग्रामवासी।

–: भवनिष्ठ :–

ओंकारनाथ मौर्य (प्रधान)
विजय कुमार गुप्ता (स्वागताध्यक्ष)
शाँति स्वरूप आर्य (मंत्री) (आर्य समाज रसौली) मो0 9935228584, 8423833600

नववर्ष 2025 के कैलेंडर

20x30 में आर्ट पेपर
मूल्य: 2000 रुपये सैकड़ा

आर्य दैनन्दिनी (आर्य डायरी) 2025

1 पृष्ठ पर 1 तिथि, वेद मन्त्र का भाग, नक्षत्र, ऋतु, सन्ध्या-यज्ञ, भजन, आर्य संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, गुरुकुलों व प्रमुख आर्यसमाजों के नाम व दूरभाष तथा अन्य जानकारियों सहित।
मूल्य : 250 रुपये

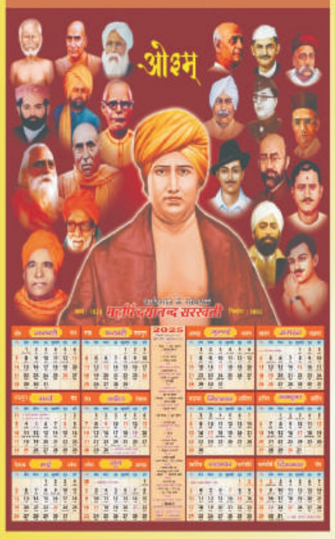

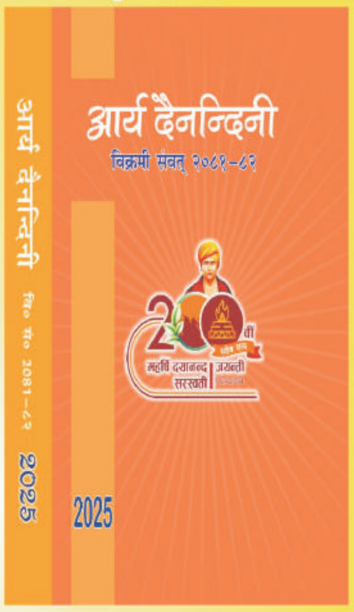

कैलेण्डर व डायरी पर अपने आर्यसमाज, विद्यालय, डी.ए.वी स्कूल, कॉलेज व संस्थान आदि का नाम छपवाने के लिए सम्पर्क करें।

(कृपया अपना ऑडर शीघ्र भेजें, सीमित संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है। पिछले वर्ष कुछ व्यक्तियों को नहीं मिल पाया था अतः शीघ्रता करें)

ऑर्डर करने के लिये 9868244958 पर Whatsapp करें

वैदिक साहित्य व प्रचार सामग्री की जानकारी हेतु विस्तृत सूचीपत्र मँगवायें।

आप भुगतान 9868244958 पर Paytm, PhonePe द्वारा कर सकते हैं

वैदिक साहित्य, ध्वज, गायत्री पटके, चित्र व प्रचार सामग्री मँगवाने के लिये सम्पर्क करें।

आर्य प्रकाशन
S-524 A, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092
चलभाष:- 9868244958 * e-mail: aryaprakashan@gmail.com

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।